हिन्दी का विदेशी भाषा के रूप में प्रचार-प्रसार

डॉ. मंजू शर्मा, सहायक प्राध्यापिका

सनराईज कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सोनीपत

म्उंपसरू कतउंदरनींतउं89 / ह3पसण्बवउ

साराश:-

हिन्दी आधुनिक विश्व परिदृश्य में अपनी बहुआयामी भूमिका के साथ तेजी से उभरती हुई एक महत्त्वपूर्ण भाषा है। हिन्दी दुनिया भर में सूचना और संवाद की एक प्रमुख भाषाई शक्ति के रूप में पहचानी जा रही है। यहीं नहीं हिन्दी भाषिक सांस्कृतिक कारणो से भी दुनिया के अनेक देशों में गहरी रूचि का केन्द्र है। हिन्दी का एक व्यापक परिदृश्य इस भाषा की लोकतंत्र और मानव अधिकारों के प्रति मूलभूत आस्था के कारण पूरी दुनिया को आश्वस्त करता है। शिक्षार्थियों को हिन्दी में रोजगार की अग्रगामी सन्भावनाएँ भी दिखाई पड़ती है। हिन्दी हमेशा अन्य भाषाओं के साथ समभाव, सहभाव और समन्वपूर्ण समावेश की पक्ष-धर रही है। इस कारण सभी ने हिन्दी को खुले दिल से अपनाया और इसी वजह से हिन्दी भाषा की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका का निरन्तर विकास हो रहा है। सारांश रूप में हिन्दी अपने गौरवशाली अतीत और विकासशील वर्तमान के साथ विश्व के भविष्य और भविष्य के विश्व की भाषा है।

सांकेतिक शब्द :- हिन्दी, विदेशी, भाषा

वैश्विक स्तर विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं के जो आंकडे मिलते है, उनमें हिन्दी को तीसरा स्थान दिया गया है। विश्व के लगभग 100 देशों में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में www हिन्दी का प्रयोग होता है अथवा उन देशों में हिन्दी के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है। इन देशों को हम तीन वर्गों में बाँट सकते है

- पहला वर्ग वह जिसमें भारत, फिजी, सूरी नाम, त्रिनिडाड जैसे देश रखे जा सकते हैं, जहां भारतवंशीय लोग भारी तादाद मे बस रहे हैं। वे लोग काम काज को लेकर इन देशों में गए थे, इनमें भारत की संस्कृति और भारत की हिन्दी से सच्चा अनुरा है, उससे जुड़े रहने की ललक है। ये लोग जो हिन्दी बोलते है, प्रयोग में लाते है, वह खड़ी बोली हिन्दी नहीं है, पर पढ़ाई-लिखाई के लिए वे मानक हिन्दी की ओर बढ़ रहे है।

- -दूसरे वर्ग में वे देश हैं जहां की भाषा उर्दू है। इन क्षेत्रों में यदि भारतीय हिन्दी भाषी मिलते हैं तो जो भाषा सम्पर्क भाषा के रूप में माध्यम बनती है, उसे हिन्दी से भिन्न नहीं कहा जा सकता। अरब राष्ट्रों में भारत और पाकिस्तान दोनों ही देशों के काम करने वाले लोग गए हुए है। इनकी पारस्परिक सम्पर्क भाषा प्राय हिन्दी होती है।

- तीसरे वर्ग में यूरोप, अमरीका आदि वे विकसित राष्ट्र रखे जा सकते है, जहां बहुत बड़ी सख्यां में भारत के लोग बस भी गए है और अस्थायी रूप में जा भी रहे है। इन लोगों में यदि किसी प्रांत विशेष या क्षेत्र विशेष के लोग परस्पर मिलते हैं तो अपनी क्षेत्रीय भाषा का ही प्रयोग करते है, पर यदि विभिन्न भारतीय भाषा भाषी मिलते हैं तो सम्पर्क भाषा प्रायः हिन्दी ही होती है।

विदेशों में हिन्दी शिक्षण लागू करना (समाधान)

विदेशों में हिन्दी के महत्व, प्रचार व प्रसार की स्थितिन सब जगह एक सी है न ऐसा होना सम्भव है। इसलिए विदेशों में हिन्दी की स्थिति, प्रचार-प्रसार की समस्याओं के भी विविध रूप है, उनके समाधान भी विविध रूपों में खोजे जाने चाहिए जिनका वर्णन इस प्रकार है।

1. प्रत्येक देश के शिक्षण स्तर एवं हिन्दी प्रशिक्षण के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर हिन्दी शिक्षण के पाठ्य का निर्माण करना चाहिए। पाठ्यक्रम इतना व्यापक एवं स्पष्ट होना चाहिए जिससे शिक्षक व छात्र का मार्गदर्शन हो सके।
2. विदेशों में हिन्दी शिक्षण करने वाले शिक्षकों के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण एवं नवीकरण पाठ्यक्रमों का आयोजन एवं संचालन होना चाहिए।
3. श्रवण कौशल, वाचन कौशल, वार्तालाप कौशल एवं रचना कौशल आदि कौशलों की शिक्षण की दृष्टि से पाठ्य सामग्री का निर्माण किया जाना चाहिए।
4. विदेशी अध्ययनकर्ताओं के भाषा शिक्षण के उद्देश्य एवं लक्ष्य को ध्यान में रखकर आवृत्ति के आधारभूत शब्दावली का निर्माण किया जाना चाहिए।
5. देवनागरी लेखन तथा हिन्दी वर्तनी व्यवस्था, देवनागरी लिपि के लिपि चिन्हों का विश्लेषण, मात्राओं से युक्त व्यजंन एवं संयुक्त व्यंजन, हिन्दी वर्तनी की विशेषताओं के अनुरूप वर्णों से बनने वाले शब्दों के अनुप्रयोगात्मक पाठों का निर्माण किया जाना चाहिए।
6. वास्तविक भाषा व्यवहार को आधार बनाकर व्यवहारिक हिन्दी संरचना, ध्वनि www संरचना, शब्द संरचना तथा पदबंध संरचना के अनुप्रयोगात्मक पाठों का निर्माण किया जाना चाहिए।
7. हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्त सांस्कृतिक संकल्पनाओं से परिचित कराने के लिए सामग्री का निर्माण किया जाना चाहिए।
8. विदेशी अध्येताओं को ध्यान में रखकर ऑनलाइन शब्दकोष की सुविधा का विकास किया जाना चाहिए।
9. कम्प्यूटर आधारित भाषा प्रयोगशाला की स्थापना एवं इसके उपयोग में आने वाली सामग्री का निर्माण करना।
10. डाउनलोड करने वाली अनेक प्रसिद्ध साइटों पर विश्व की अन्य सभी प्रमुख भाषाएँ उपलब्ध हैं, किन्तु हिन्दी नहीं, इसके लिए सार्थक पहल व प्रयत्न किए जाने चाहिए।
11. कम्प्यूटर साधित हिन्दी भाषा शिक्षण की प्रभूत सामग्री के निर्माण के लिए ऐसी परिचालन प्रणाली का विकास जिससे हिन्दी में काम करना सुविधाजनक बनक सके।
12. हिन्दी साहित का अध्ययन करने वाले विदेशी अध्येताओं के लिए हिन्दी साहित्य के रचनाकारों तथा उनकी रचनाओं का विवरण भारत के हिन्दी समाज के उस काल की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं दार्शनिक पृष्टभूमि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

हिन्दी का वैश्विक स्तर पर प्रसार-प्रचार व केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का योगदानः -

70 के दशक में भारत सरकार की विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार की योजना www की वजह से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी शिक्षण-प्रशिक्षण और अनुसंधान के कार्यों का महत्व बढ़ा, जिसके कारण विदेशी शिक्षार्थी नियमित रूप से हिन्दी सीखने के लिए भारत आने लगे। इस प्रक्रिया में केन्दीय हिन्दी संस्थान की महत्वूर्ण भूमिका रही है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के सहयोग से हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षार्थी और शोद्यार्थी अपने-अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण और मार्गदर्शन करते रहे हैं।

1. इस प्रकार हिन्दी के शैक्षणिक प्रचार-प्रसार से गुयाना, त्रिनिडाड, सूरी नाम, फिजी, मॉरीशस जैसे अनेक देशों में हिन्दी के प्रयोग से हिन्दी को व्यापक सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित करने में मदद मिली है।
2. मॉरीशस में प्राथमिक से स्नातकोत्तर तक हिन्दी की पढाई होती है। यहाँ कई पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है, जिनमें विश्व हिन्दी सचिवालय द्वारा प्रकाशित विश्व हिन्दी समाचार सम्मिलित हैं।
3. त्रिनिडाड और ट्वैगो की भाषाओं में हिन्दी का दूसरा स्थान है।
4. वियतनाम विश्वविद्यालय में सन 2000 में हिन्दी भाषा शिक्षण की शुरूआत की गई।
5. भारत के पड़ौसी देश जैसे पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, अफगानिस्तान में हिन्दी बोलने व जानने वालों की बड़ी संख्या है।
6. श्रीलंका में हिन्दी काफी लोकप्रिय है। हिन्दी निकेतन की विभिन्न शाखाओं, कोलंबो विश्वविद्यालय जयवर्धन विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है।
7. जापान में टोकियो आंसाका, ओताननी विश्वविद्यालयों के अलावा, गैर सरकारी संस्थाएँ तथा सांस्कृतिक केन्द भी हिन्दी से जुड़े हुए हैं। हिन्दी साहित्य के कई रचनाकारों का अनुवाद जापानी भाषा में हो चुका है।
8. पिछले चार दशकों से दक्षिण कोरिया में हिन्दी का प्रचार-प्रसार तेजी से हुआ। हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज और बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन लैंग्वेजेज में हिन्दी का चार वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम का संचालक होता है।
9. टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो. हाजमी के अनुसार, सन 1999 में मशीन ट्रांसलेसन सम्मिट में जो भाषाई आंकडे प्रस्तुत किए थे उनके अनुसार विश्वभर में चीनी भाषा बोलने वालों का प्रथम स्थान और हिन्दी का द्वितीय है, अंग्रेजी तीसरे स्थान पर रह जाती है।
10. यूरोप के कई देशों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान व्यापारिक एवं राजनीतिक कारणों से विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण किया जाता रहा है।

विश्व के लगभग 100 विश्वविद्यालयों और प्रमुख शिक्षा संस्थानों में हिन्दी भाषा के अध्ययन की व्यवस्था है। यह भी अनुभव किया जाता है कि आने वाले समय में इनकी संख्या तेजी से बढोतरी हो।

निष्कर्षः-

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि हिन्दी मानवीय मूल्यों की भाषा के रूप में विकसित हुई है। उसमें मानवीय संस्कृति के उदार मूल्यों और प्रेम, करूणा और उदारता के गीत गाने की वृति रही है। जिन वीरों और संतों ने, जिन भक्तों और महात्माओं ने इसे अपनाया और फैलाया है, उनमें देश के हर भाग के लोग थे,

हर मजहब के लोग थे, हर जुबान के लोग थे। मानवता के कल्याण के लिए हिन्दी का प्रचार-प्रसार आज अकेले भारत के लिए ही नहीं, अपितु विश्व के हित के लिए भी है। अतः विश्व हिन्दी के प्रचार-प्रसार की इस भावना को हमें भारत में विकसित करना होगा और विदेशों में भी।

सन्दर्भः-

1. प्रो. महावीर सरन जैन, 'विदेशों में हिन्दी शिक्षणः समस्याएँ और समाधान". केन्द्रीय हिन्दी संस्थान।
2. प्रो. प्रेम स्वरूप गुप्त. 'विदेशों में हिन्दी प्रचार-प्रसार और स्थिति के पहलू ।
3. डॉ. लक्ष्मी प्रसाद, "हिन्दी का वैश्विक विस्तार तथा भविष्यगामी सम्भावनाएँ", केन्द्रीय हिन्दी शिक्षक मंडल, आगरा।
4. भ्पदकपण्मइकनदपंण्ववउ
5. ण्वनतदसणपिवदसपदमण्वतहण्